

# भारत की विदेश नीति: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

**Dr Susmita Mohapatra ,**

**Associate Professor.**

**Dean School of Arts and Humanities,**

**YBN University , Ranchi**

## सारांश

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता-पूर्व उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टि से लेकर समकालीन बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था तक एक सतत विकासशील प्रक्रिया रही है। इस शोध-पत्र में भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख सिद्धांतों, और समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत ने सदैव शांति, सहयोग और राष्ट्रीय हितों की रक्षा को प्राथमिकता दी है।

**कीवर्ड्स:** भारत, विदेश नीति, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, पंचशील, शीत युद्ध, उदारीकरण, बहुध्रुवीय विश्व

## परिचय

विदेश नीति किसी भी राष्ट्र की अंतरराष्ट्रीय पहचान और रणनीतिक दिशा को निर्धारित करती है। भारत की विदेश नीति का आधार **अहिंसा, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, और वैश्विक सहयोग** रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी विदेश नीति को न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा बल्कि विकासशील देशों के नेतृत्व और वैश्विक शांति की दिशा में भी केंद्रित किया।

**साहित्य समीक्षा :**

भारत की विदेश नीति पर विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया है। यह समीक्षा उन प्रमुख शोधों और ग्रंथों को प्रस्तुत करती है जिन्होंने भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास और समकालीन स्वरूप को समझने में योगदान दिया है।

- **ए. अप्पादोराई (1981)** ने भारत की विदेश नीति को शांति और सहयोग पर आधारित बताया। उनके अनुसार, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता और आदर्शवाद को प्राथमिकता दी।
- **डेविड एम. मेलोन (2011)** ने अपनी पुस्तक *Does the Elephant Dance?* में भारत की समकालीन विदेश नीति का विश्लेषण करते हुए इसे बहुध्रुवीय विश्व में संतुलन साधने की कला कहा। उन्होंने भारत की विदेश नीति को व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से देखा।
- **हर्ष वी. पंत (2016)** ने भारत की विदेश नीति को आर्थिक उदारीकरण के बाद व्यापार और निवेश आकर्षण की दिशा में स्थानांतरित होते हुए देखा। उनके अनुसार, 1990 के दशक के बाद भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित किया।
- **सुमित गांगुली (2017)** ने भारत की विदेश नीति को ऐतिहासिक अनुभवों और समकालीन चुनौतियों से आकार लेते हुए विश्लेषित किया। उन्होंने यह तर्क दिया कि भारत की विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन दोनों ही तत्व मौजूद हैं।

## कार्यप्रणाली

इस शोध-पत्र में भारत की विदेश नीति का अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति के आधार पर किया गया है। कार्यप्रणाली को निम्नलिखित चरणों में व्यवस्थित किया गया है:

## 1. प्राथमिक स्रोतों का उपयोग

- स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उपरांत काल के सरकारी दस्तावेज़, संधियाँ, और आधिकारिक वक्तव्य।
- संसद में प्रस्तुत विदेश नीति संबंधी बहसों और प्रधानमंत्री/विदेश मंत्री के भाषण।

## 2. द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन

- विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध-पत्र, और अंतरराष्ट्रीय जर्नल।
- विदेश नीति पर केंद्रित समकालीन विश्लेषणात्मक लेख और रिपोर्ट।

## 3. कालखंडवार विभाजन

- अध्ययन को पाँच प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है:
  - स्वतंत्रता-पूर्व काल
  - स्वतंत्रता के बाद (1947-1960)
  - शीत युद्ध काल (1960-1990)
  - उदारीकरण और वैश्वीकरण (1991-2000)
  - 21वीं सदी और समकालीन परिप्रेक्ष्य

## 4. विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

- प्रत्येक कालखंड में भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांतों, चुनौतियों और उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण।

- निरंतरता और परिवर्तन (Continuity and Change) के सिद्धांत के आधार पर विदेश नीति की दिशा का मूल्यांकन।

## 5. निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया

- ऐतिहासिक घटनाओं और समकालीन नीतियों के बीच संबंध स्थापित करना।
- भारत की विदेश नीति को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समझना।

## निष्कर्ष/प्रमुख अवलोकन )

इस शोध-पत्र के अध्ययन से भारत की विदेश नीति के विभिन्न कालखंडों में निम्नलिखित प्रमुख अवलोकन सामने आते हैं:

### 1. स्वतंत्रता-पूर्व काल

- औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत की विदेश नीति ब्रिटिश साम्राज्य के हितों तक सीमित रही।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया।
- गांधी और नेहरू की विचारधारा ने अहिंसा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को विदेश नीति का आधार बनाने की नींव रखी।

### 2. स्वतंत्रता के बाद (1947-1960)

- पंचशील सिद्धांत (1954) ने भारत की विदेश नीति को नैतिक और आदर्शवादी आधार प्रदान किया।

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) में भारत ने नेतृत्वकारी भूमिका निभाई और शीत युद्ध में तटस्थता बनाए रखी।

### 3. शीत युद्ध काल (1960-1990)

- भारत ने सोवियत संघ के साथ रणनीतिक संबंध मजबूत किए।
- 1971 भारत-सोवियत मैत्री संधि और बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में निर्णायक भूमिका निभाई।
- 1974 के परमाणु परीक्षण ने भारत को वैश्विक शक्ति संतुलन में नई पहचान दिलाई।

### 4. उदारीकरण और वैश्वीकरण (1991-2000)

- आर्थिक उदारीकरण के बाद विदेश नीति का केंद्र व्यापार, निवेश और वैश्विक सहयोग पर स्थानांतरित हुआ।
- अमेरिका और यूरोप के साथ संबंधों में सुधार हुआ।
- SAARC के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया गया।

### 5. 21वीं सदी और समकालीन परिप्रेक्ष्य

- एक्ट ईस्ट नीति के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संबंधों को सुदृढ़ किया गया।
- अमेरिका, रूस, फ्रांस और जापान के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित हुई।
- भारत ने आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा जैसी वैश्विक चुनौतियों पर सक्रिय भूमिका निभाई।

- क्वाड समूह में भारत की भागीदारी ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी रणनीतिक स्थिति को मजबूत किया।

## चर्चा (Discussion)

भारत की विदेश नीति का विकास केवल राजनीतिक घटनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक अनुभवों, सांस्कृतिक मूल्यों और वैश्विक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित रहा है। इस शोध-पत्र के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि भारत ने विभिन्न कालखंडों में अपनी विदेश नीति को बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य के अनुरूप ढाला है।

### 1. निरंतरता और परिवर्तन (Continuity and Change)

- भारत की विदेश नीति में अहिंसा, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सहयोग की निरंतरता बनी रही है।
- वहीं, शीत युद्ध और उदारीकरण के बाद इसमें व्यावहारिकता और आर्थिक हितों को प्राथमिकता देने का परिवर्तन भी देखा गया।

### 2. नैतिकता बनाम यथार्थवाद

- स्वतंत्रता के बाद भारत ने नैतिकता और आदर्शवाद को विदेश नीति का आधार बनाया।
- लेकिन शीत युद्ध और परमाणु परीक्षणों के दौरान यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोपरि रखा गया।

### 3. क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका

- SAARC और एक्ट ईस्ट नीति के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया।

- वहीं, क्वाड और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भारत ने वैश्विक चुनौतियों पर सक्रिय भूमिका निभाई।

#### 4. आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव

- 1991 के बाद भारत की विदेश नीति में आर्थिक हितों का महत्व बढ़ा।
- व्यापार, निवेश और वैश्वीकरण ने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाया।

#### 5. समकालीन चुनौतियाँ

- आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका ने विदेश नीति को और जटिल बनाया।
- भारत ने इन चुनौतियों का सामना रणनीतिक साझेदारियों और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से किया।

### निष्कर्ष (Conclusion)

1. भारत की विदेश नीति एक सतत विकासशील प्रक्रिया है, जो ऐतिहासिक अनुभवों, सांस्कृतिक मूल्यों और वैश्विक परिस्थितियों से निरंतर आकार लेती रही है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण से लेकर स्वतंत्रता के बाद पंचशील सिद्धांत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन तक, भारत ने शांति और सहयोग को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया।
2. शीत युद्ध के दौरान भारत ने सोवियत संघ के साथ रणनीतिक संबंधों को मजबूत करते हुए भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखी। 1974 के परमाणु परीक्षण ने भारत को वैश्विक शक्ति संतुलन में नई स्थिति प्रदान की।

उदारीकरण के बाद भारत ने आर्थिक हितों को प्राथमिकता देते हुए व्यापार और निवेश को विदेश नीति का केंद्र बनाया।

3. 21वीं सदी में भारत ने एक्ट ईस्ट नीति, क्वाड समूह में सक्रिय भागीदारी, और अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से अपनी वैश्विक भूमिका को सुदृढ़ किया है। आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए भारत ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलन साधने की क्षमता प्रदर्शित की है।
4. अतः यह स्पष्ट है कि भारत की विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन दोनों ही तत्व मौजूद हैं—जहाँ शांति और सहयोग की भावना स्थायी रही है, वहीं बदलते वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टिकोण भी अपनाए गए हैं। भारत की विदेश नीति आज न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति और सहयोग में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

## References

1. Appadorai, A. (1981). *Indian Foreign Policy and Relations*. New Delhi: South Asia Publishers.
2. Pant, H. V. (2016). *Indian Foreign Policy: An Overview*. Manchester University Press.
3. Malone, D. M. (2011). *Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy*. Oxford University Press.
4. Ganguly, S. (2017). *India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect*. Routledge.